E-ISSN: 2664-603X
P-ISSN: 2664-6021
IJPSG 2021; 3(2): 149-151
www.journalofpoliticalscience.com
Received: 09-05-2021
Accepted: 15-06-2021

प्रदीप कुमार
PGT (राजनीति विज्ञान) GSSS कंवाली, रेवाडी, हरियाणा, भारत

Corresponding Author:
प्रदीप कुमार
PGT (राजनीति विज्ञान) GSSS कंवाली, रेवाडी, हरियाणा, भारत

QUAD: चीन पर अंकुश हेतू एक रणनीतिक पहल

प्रदीप कुमार

प्रस्तावना

QUAD का विचार प्रथम बार 2004 में उस समय आया जब पुरा हिन्द महासागर क्षेत्र सुनामी की त्रासदी झेल रहा था। इस त्रासदी से निपटने के बाद तत्कालीन अमेरिकी राष्ट्रपति जार्ज डब्लू बुश की ओर से एक बयान आया था। उन्होने बयान में अमेरिका, जापान, भारत और आस्ट्रेलिया को लेकर एक संगठन बनाने की बात सामने रखी थी जो सुनामी जैसे संकट में फंसे लोगों को बचाने, राहत पहुंचाने, बेघर लोगों के पुनर्वास, बिजली, कनेक्टिविटी और बन्दरगाहों को बहाल करने का कार्य करेगा। आगे चलकर साल 2007 में इसी विचार को मूल में रखकर जापान के प्रधानमन्त्री शिंजो आबे ने QUAD ग्रुप की आवश्यकता पर जोर देते हुए सामुद्रिक क्षेत्रों में बचाव एंव रक्षा कार्यों के प्रति अपनी प्रतिबद्धता जतायी थी। यदपि अगले कुछ वर्षों में भी इसे अमलीजामा नहीं पहनाया जा सका। वर्ष 2017 में एक नये उददेश्य के साथ भारत, जापान, अमेरिका तथाआस्ट्रेलिया आसियान सम्मेलन के दौरान फिलीपींस की राजधानी मनीला में एकजुट हुए। इस बार उददेश्य था इंडो–पैसिफिक क्षेत्र में चीन के बढते प्रभाव को अंकुश में रखना। QUAD का अर्थ क्वाड्रीलेटरल सिक्योरिटी डायलोग है, जो जापान, आस्ट्रेलिया, भारत और अमेरिका के बीच एक बहुपक्षीय समझौता है। मूल रूपसे ये इंडो पैसिफिक स्तर पर काम कर रहा है ताकि समुद्री रास्तों से व्यापार आसान हो सके लेकिन अब ये व्यापार के साथ–साथ सैनिक बेस को मजबूती देने पर ज्यादा ध्यान दे रहा है ताकि शक्ति सन्तुलन बनाए रखा जा सके।

मनचित्र में जब क्रमशः भारत, जापान, अमेरिका और आस्ट्रेलिया की रेखाओं की सहायता से मिलाया जाए तो एक चतुर्भुज जैसी आकुति बनकर सामने आती है। यहीं से QUAD समूह के नाम को लिया गया है। 2007 में जापान के प्रधानमन्त्री शिंजो आबे ने इस अवधारणा को प्रस्तुत करते समय इसे ''स्वतन्त्रता एवं समृद्धि के आर्क'' के रूप में प्रस्तुत किया था। वर्ष 2007 एशिया – प्रशान्त महासागर मे चीन ने अपना वर्चस्व बढाना शुरू कर दिया था। चीन पडोसियों को धमकाने, दक्षिणी चीन सागर में अपना दबदबा स्थापित करने, समुद्र मे सैन्य बेस लगातार बढाने लगा था। इसे देखते हुए ही जापान के तत्कालीन प्रधानमन्त्री शिंजो आबे ने एक ऐसे संगठन का प्रस्ताव दिया, जिसमे इस सामुद्रिक क्षेत्र में आने वाले ताकतवर देश शामिल हो सकें। आखिरकार यह संगठन बना जिसकी पहली मीटिंग विदेश मन्त्री स्तर की वर्ष 2019 में न्यूयार्क में हुई थी। इसके बाद कोरोना के कारण साल 2020 मे नेताओं की मुलाकात बाधित हुई। इसका वर्चुअल स्तर पर ही शिखर सम्मेलन होने जा रहा है। 12 मार्च 2021 को इसका पहला शिखर सम्मेलन हुआ है।

हिन्द – प्रशान्त क्षेत्र में चीन के बढते दबदबे को रोकने हेतू क्वाड एक महत्वपूर्ण रणनितिक पहल है इसे महत्व व भविष्य का अन्दाजा इसी से लगाया जा सकता है कि इसके निर्माण एवं सम्मेलन से ही चीन बुरी तरह बौखलाया हुआ है। वैसे तो यह संगठन हिन्द – प्रशान्त क्षेत्र में सहयोग बढाने को लेकर स्थापित हुआ है लेकिन चीन इससे खासा परेशान रहता है। इसकी मुख्य वजह यह है कि संगठन दूसरे मुददों के साथ समुद्र मे चीन की बढती दादागिरी पर भी लगाम कसने की तैयारी मे है। चीन बीते दो दशक मे लगातार समुद्र मे अपना सैन्य बेस तथा व्यापार तेजी से बढा रहा है। चीन ये समझ चुका है कि आने वाले समय मे समुद्र पर राज करने वाला देश ही दुनिया पर राज करेगा। यही कारण है कि 'साउथ चाइना सी' पर भी कब्जे के लिए उसने मुहिम छेड रखी है इस सम्बन्ध मे वह अन्तरीष्ट्रीय न्यायालय के निर्णय को भी दरकिनार करने पर उतारू है। साथ ही साथ वो समुद्र मे नकली द्वीप बनाकर वहां अपने सैनिक तैनात कर रहा है। यानी ये पूरी तैयारी है कि भविष्य मे समुद्र पर उसका कब्जा हो जाए। इसी खतरे को भांपते हुए क्वाउ ने अपनी रणनीति में क्वाड देशों को सामुद्रिक सहायता देने के अलावा समुद्र मे शान्ति और शक्ति सन्तुलन बनाए रखने को प्राथमिकता दी। चीन इस बात पर बौखलाया हुआ है और लगातार क्वाड देशों के खिलाफ अनाप–शनाप बयानबाजी कर रहा है। क्वाड की वजह से चीन के माथे पर जिसके अन्तर्गत जनसमुदाय को केन्द्र में सिलवटें रहती हैं।

वास्तव में चीन को लगता है कि क्वाड मे शामिल भारत, अमेरिका और जापान जैसे शक्तिशाली देश उसके खिलाफ मिलकर किसी रणनीतिक साजिश को रच रहे हैं। चीन को ये भी लगता है कि क्वाड समुद्र मे चीन के आसपास अपने वर्चस्व को बढाना चाहता और भविष्य उसके विरूद्ध घेरेबन्दी और अधिक मजबूत हो जाएगी। इसी बीच क्वाड मे शामिल दो देशों भारत और जापान के बीच समुद्र में सहायता को लेकर एक और अहम समझौता हुआ है इसके अर्न्तगत भारत एवं जापान एक – दूसरे को सैनिक सहायता देंगे और इसका एक कॉमन मकसद चीन के खतरे को कम करना होगा। इसे विशेषज्ञ 'एंटी–चाइना' समझौता भी कह रहे हैं। वैसे इस समझौते का नाम 'म्यूचुअल लॉजिस्टिक सपोर्ट अरेंजमेन्ट (MLSA) है। इसके तहत भारतीय सेनाओं को जापानी सेनाएं अपने अडडों पर जरूरी सामग्री की आपूर्ति कर सकेंगी। साथ ही भारतीय सेनाओं के रक्षा साजो सामान की सर्विसिंग भी देगी। यह सुविधा भारतीय सैन्य अडडों पर जापानी सेनाओं की भी मिलेगी। युद्ध की स्थिति मे ये सेवाएं बेहद अहम मानी जाती हैं। माना जा रहा है कि समुद्री क्षेत्र मे चीन की लगातार बढी मौजूदगी जब आतंक और दबदबे मे बदली, तब से ही इस समझौते पर बात हो रही थी। अब इस पैक्ट को एक तरह से एंटी – चाइना पैक्ट की तरह देखा जा रहा है जो हिन्द महासागर मे चीन को कमजोर बनाएगा।

इण्डो – पैसिफिक क्षेत्र में क्वाड (QUAD) की भूमिकाः–

- दक्षिणी चीन सागर की तट रेखा पर स्थित देशों तथा अपने पडोसी देशों को चीन धमकाता रहता है तथा उनके साथ सदैव माईंड गेम और ब्लेम गेम द्वारा दबाव बनाकर परेशान करता है। मनमाने ढंग से अन्य देशों की समुद्री सीमा पर अधिकार जताता है साउथ चाइना सी में दूसरे देशों के जहाजों की आवाजाही को अनावश्यक और अनाधिकार रूप से बाधित करता है। चीन की इन हरकतों से उसके सभी पडोसी देश परेशान हो गए हैं।
- साउथ चाइना शी में चीन ने अन्तर्राष्ट्रीय समुद्री कानूनो को ताक पर रखकर छोटे – छोटे कृत्रिम द्वीपों का निर्माण किया है। चीन इन द्वीपों का सैन्यीकरण कर रहा है ऐसा करके वह उस क्षेत्र में अपना कब्जा दर्शाना चाहता है।
- चीन की वर्चस्व बढाने की नीति ने सभी पडौसियों को भी परेशान कर दिया है। QUAD ग्रुप के माध्यम से इंडो पैसिफिक क्षेत्र की चारों प्रमुख आर्थिक शक्तियों – भारत, अमेरिका, जापान और आस्ट्रेलिया ने चीन को यह संदेश देने की कोशिश भी की है कि क्षेत्र मे उसके दबदबे को स्वीकार नही किया जाएगा और उसे कोई भी कदम अन्तर्राष्टीय कानून के अनुसार ही उठाना होगा।
- रणनीतिकारों एवं विदेश नीति के जानकारों का मानना है कि QUAD ग्रुप के द्वारा चीन को एकपक्षीय सैन्य नीतियों को त्यागने तथा पडौसी देशों से सहयोग एवं विचार – विमर्श परिपूर्ण सम्बन्ध स्थापित करने के लिए बाध्य किया जा सकता है।
- चीन इस क्षेत्र में एक तरफा निवेश एवं संधियाँ कर रहा है। जो कि उसके पडौसी देश तथा अन्य देशों के लिए खतरा बन रही है। QUAD ग्रुप के द्वारा उसके इस प्रकार के व्यवहार पर नियन्त्रण रखा जा सकता है।
- चीन के बढते प्रभाव को कम करने हेतू QUAD समूह के देश भविष्य में इस ग्रुप मे इस क्षेत्र के अन्य देशों को अपने साथ जोडकर चीन को रक्षात्मक स्थिति मे ला सकते हैं। ग्रुप के चारों देश आपसी सहयोग से ऐसी स्वतन्त्र, सुरक्षात्मक, आर्थिक नीतियां बनाए जिससे इस क्षेत्र में अन्य देशों को चीन के विकल्प के रूप में उपलब्ध करवाया जा सके तथा चीन के बढते प्रभाव व अतिक्रमण को रोका जा सके।
- QUAD समान विचारधारा वाले अन्य देशों को भी अपने साथ जोडकर इसे और अधिक विस्तार कर सूचनाओं के साझाकरण तथा परस्पर हितों का ध्यान रखने सम्बन्धी नीतियों का पालन करते हुए आपसी सहयोग बढाते हुए चीन को अलग – थलग कर सकते है।

QUAD भारत के लिए क्यों जरूरी

- भारत का चीन के साथ आय दिन सीमा को लेकर विवाद होता रहता है अर्थात भारत चीन की विस्तार वादी एवं अतिक्रमण वादी नीति का शिकार है। ऐसी स्थिति मे भारत को जरूरत है ऐसे वैश्विक संगठनो का हिस्सा बनने की जो उसके हितों की रक्षा में सक्षम हो।
- चीन जिस तरह से इंडो – पैसिफिक क्षेत्र में अपनी पैठ बढा रहा है इससे निकट भविष्य में भारत के व्यापारिक समुद्री मार्गों के प्रभावित होने का खतरा बढ गया है। QUAD ग्रुप में जुडने से चीन पर एक तरह का दबाव सा हो गया है यह भारत के समुद्री हितों की रक्षा में सहायक सिद्ध होगा तथा चीन की बढती शक्ति को सन्तुलित कर नियम आधारित वैश्विक व्यवस्था को पुनः स्थापित कर सकता है।
- QUAD समुह से जुडना भारत के लिए अपनी सीमाओं की सुरक्षा के लिए एक प्रतिसन्तुलित शक्ति के रूप में कार्य कर सकती है।
- QUAD समूह भारत के लिए पूर्वी एशिया में विकसित देशों के साथ मजबूत सम्बन्ध बनाने, रणनीतियों का समन्वय करने तथा सामरिक हितों की रक्षा के लिए एक महत्वपूर्ण आधार बन सकता है। यह भारत की "Look East" तथा "Act East" की पोलिसी को लागू करने तथा कार्यान्वित करने का जरिया बन सकता है।
- QUAD समूह चीन के 'बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव' के खिलाफ एक बहुत बडा हथियार साबित हो सकता है। चूंकि भारत चीन के इस ड्रीम प्रोजक्ट में शामिल नही हो रहा है तो इस क्षेत्र में अलग – थलग होने से बचने हेतू ऐसे ग्रुप में शामिल होना कूटनीतिक रूप से उचित फैसला है।
- भारत चीन द्वारा हिन्द महासागर में भारत को घेरने के लिए चलायी जा रहं "स्ट्रिंग्स ऑफ पर्ल्स" योजना का जवाब QUAD समूह के द्वारा बेहतर तरीके से दे सकता है। चीन को उसी की भाषा में जवाब देना जरूरी है उसे यह Message देना जरूरी है कि यदि वह हिन्द महासागर में अपने गलत इरादे रखेगा तो भारत भी उसे पैसिफिक सी में घेरने की क्षमता रखता है

QUAD को लेकर भारत की चिंताएं

- चीन भारत का व्यापार में सहयोगी देश भी है। भारत का चीन के साथ द्विपक्षीय व्यापार करीब 5.62 लाख करोड रूप्ये का है। यदि भारत QUAD समूह को लेकर ज्यादा सक्रिय और आक्रामक रहता है तो व्यापार में विपरीत असर पड सकता है।
- भारत गुटनिरपेक्षता का संस्थापक सदस्य रहा है तथा गुटनिरपेक्षता की नीति पर कायम रहा है। लेकिन QUAD की सदस्यता तथा भविष्य में उसके सैन्य ग्रुप में बदलने पर भारतीय गुटनिरपेक्षता की नीति पर सवालिया निशान लग सकता है।
- रूस अमेरिका का स्वाभाविक प्रतिद्वन्दी है तथा रूस के हित

QUAD समूह से प्रभावित होते हैं। भारत – रूस के सम्बन्ध पहले से ही बहुत समृद्ध रहे हैं। भारत QUAD समूह में सहभागिता रूस ओर भारत के सम्बन्धो को प्रभावित कर सकती है।

- भारत QUAD समूह के सैन्यीकरण के पक्ष में नही है। जबकि जापान – अमेरिका ओर आस्ट्रेलिया के आपस में सैन्य सम्बन्ध भी हैं। अर्थात वे पूर्व से ही सैन्य सहयोगी हैं। QUAD समूह को एक सैन्य साझेदारी संगठन का रूप देने की इन राष्ट्रों की कोशिश रहेगी।
- भारत एशिया महाद्वीप में चीन और रूस के साथ बहुत से मंचों में राजनैतिक, कूटनीतिक और आर्थिक सम्बन्ध साझा करता है जैसे – एशिया विकास बैंक, ब्रिक्स, शंघाई सहयोग संगठन आदि। भारत के QUAD समूह में सक्रिय भागीदारी से उसके विभिन्न मन्चों पर चीन और रूस के साथ सम्बन्ध प्रभावित हो सकते हैं।
- भारत चीन के साथ विभिन्न मंचों पर विकासशील एशियाई देशों के रूप में विकसित देशों की नीतियों का विरोध करता है। जैसे – WTO, IMF की विकासशील एवं अल्पविकसित देशों के विपरित नीतियों का विरोध करना, पेटेन्ट कानूनों का विराध, जलवायु परिवर्तन पर थोपे जाने वाले विभिन्न प्रतिबन्धो एवं टारगेट (लक्ष्य) का विराध करने हेतू चीन भारत मिलकर आवाज उठाते हैं।

निष्कर्षः–

चीन और QUAD के बीच भारत की भूमिका बहुत ही संवेदनशील होने वाली है। एक तरफ चीन जैसा शक्तिशाली और विस्तारवादी सोच वाला देश है जो बार – बार सीमा पर अतिक्रमण करके भारत के विभिन्न सीमावर्ती प्रदेशों को अपना क्षेत्र बताने लगता है तो दूसरी तरफ अमेरिका है जिसके साथ भारत एक सीमा से अधिक सहयोग बढाकर भविष्य में विदश नीति को उसके दबाव में नहीं लाना चाहता। एक तरफ चीन 'स्ट्रिग ऑफ पर्ल्स' एवं 'वन बेल्ट वन रोड' के माध्यम से भारत को घेरना चाहता है तो दूसरी तरफ अमेरिका उसे अपना सहयोगी बनाकर एशिया एवं हिन्द महासागर में उसके माध्यम से अपने हित साधना चाहता है। चीन के साथ भारत सख्ती से पेश नही आ सकतां है इसके पीछे वजह है भारत का चीन के साथ द्विपक्षीय व्यापार तथा कुछ उदयोगों हेतू कच्चे माल हेतू चीन पर उसकी निर्भरता। चीन की ''व्यापार करो और राज करो'' की नीति अब विश्व की समझ में आने लगी है। चीन के पिछले बर्ताव व भविष्य के इरादों को देखते हुए भारत को QUAD की राह पर आगे बढना होगा एवं इसके माध्यम से उसे घेरते हुए दबाव बनाए रखना होगा अन्यथा उसे चीन के खतरनाक मंसूबों का सामना करना पडेगा। अतः QUAD को एक रणनीतिक हथियार के रूप में प्रयोग करते रहना होगा।

सन्दर्भ

1. बी. एल. फडिया – राजनीति विज्ञान
2. भारत की विदेश नीति –M.D.U. रोहतक के M.A. की पुस्तक
3. आर. एस. यादव, भारत की विदेश नीति : एक विश्लेषण, नई दिल्ली
4. प्रतियोगिता दर्पण के विभिन्न मासिक अंकों के लेख
5. विभिन्न समाचार पत्रों के सम्पादकीय लेख
6. www.timesnowhindi.com
7. www.informise.com